2 नवम्बर 2019, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/-   आर. एन. आई. 31109/77   JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि   प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 42, अंक : 15   सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल**   आजीवन शुल्क : 251 रुपये
नवम्बर (प्रथम), 2019 (वीर नि.संवत्-2546)   सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**   वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

22वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सम्पन्न

शिविर में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर के 194, आचार्य अकलंक दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय बांसवाड़ा के 45, आचार्य धरसेन दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय कोटा के 47 एवं शाश्वतधाम उदयपुर के 26 - इसप्रकार कुल 312 विद्यार्थियों ने देश के कोने-कोने से पधारे 22 विद्वानों के माध्यम से जैनदर्शन के 22 सैद्धान्तिक विषयों का गहराई से अध्ययन किया।

जयपुर (राज.) : पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 13 से 20 अक्टूबर तक जिनागम के 22 विषयों का व्यवस्थित अध्ययन कराने वाला 22वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर अनेक मांगलिक आयोजनों सहित संपन्न हुआ।

प्रवचन - शिविर में प्रतिदिन प्रात:काल पूज्य गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों के पश्चात् ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** द्वारा

ध्वजारोहण करते हुए
निहालचंद घेवरचंद परिवार, जयपुर

'तत्त्वचिंतन' विषय पर मार्मिक प्रवचन हुये। रात्रिकालीन प्रवचनों में प्रतिदिन ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा 'पंचाध्यायी के नय' विषय पर हुये प्रवचनों के पूर्व पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा के व्याख्यानों का लाभ मिला।

शिक्षण कक्षायें - ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा सामान्य श्रावकाचार, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा प्रवचनसार (ज्ञानाधिकार) व मोक्षमार्गप्रकाशक (सात तत्त्व संबंधी भूल), डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली द्वारा सर्वज्ञसिद्धि व न्यायदीपिका, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा प्रमाण का प्रामाण्य व समयसार में उपयोग की चर्चा, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा नैगमादि सप्त नय व तीन लोक, डॉ. नरेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर द्वारा प्रमाण का विषय व फल तथा क्रमबद्धपर्याय, डॉ. योगेशजी शास्त्री अलीगंज द्वारा परीक्षामुख व सप्तभंगी,

(शेष पृष्ठ 4 पर...)

उद्घाटन समारोह में मंचासीन महानुभाव

सम्पादकीय -

भगवान महावीर के विश्वव्यापी संदेश

3 - पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

यदि मन में क्रोधादि विकार रूप हिंसा का भाव पैदा हो जायेगा तो वाणी में आयेगा ही और वाणी में आयेगा तो काया के द्वारा प्रवृत्ति होगी ही। अतः भगवान महावीर ने मात्र द्रव्यहिंसा से बचने की ही बात नहीं कही; बल्कि भावहिंसा पर ही रोक लगाना आवश्यक माना है। हिंसा का भाव मन में (आत्मा में) उत्पन्न ही न हो, तभी हम द्रव्य हिंसा से बच सकते हैं।

उदाहरणार्थ - यदि हमें शराबबन्दी करना हो तो **'लोग शराब न पियें'** - क्या ऐसा कठोर कानून बनाने से शराबबन्दी सफल हो जायेगी? नहीं होगी; क्योंकि जबतक कहीं न कहीं चोरी-चोरी शराब का उत्पादन होता रहेगा, तो वह मार्केट में आयेगी ही और मार्केट में भी आयेगी तो लोगों के पेट में जायेगी ही और लोगों के पेट में जायेगी तो माथे में भन्नायेगी ही, अतः यदि हम चाहते हैं कि शराब माथे में न भन्नाये, लोग शराब न पिये तो हमें उन अड्डों को बन्द करना होगा जहाँ शराब बनती है।

इसीप्रकार यदि हम चाहते हैं कि जीवन में हिंसा प्रस्फुटित ही न हो तो हमें उसे आत्मा के स्तर पर, मन के स्तर पर ही रोकना होगा; क्योंकि यदि आत्मा या मन के स्तर पर हिंसा उत्पन्न हो गयी तो वह वाणी और काया के स्तर पर भी प्रस्फुटित होगी ही।

जब तक लोगों की आत्मा में निर्मलता नहीं होगी, तबतक हिंसा को रोकना संभव नहीं होगा। अतः हमें वस्तुस्वरूप समझकर पर पदार्थों में हो रही इष्टानिष्ट की मिथ्या कल्पना को मेटना होगा, तभी हमारे राग-द्वेष के भाव कम होंगे और वीतराग धर्म की ओर अग्रसर हो सकेंगे हिंसा आदि मनोविकारों से बचने का अन्य कोई उपाय नहीं है।

एक बात का मुझे बार-बार विचार आता है कि न केवल भगवान महावीरस्वामी, बल्कि वर्तमान चौबीसी के सभी तीर्थंकर जब क्षत्रियवर्ण के थे और भगवान महावीरस्वामी के प्रमुख गणधर गौतम स्वामी भी ब्राह्मणवर्ण के थे; तो फिर भी उनके द्वारा प्रचारित-प्रसारित यह जैनधर्म जैसी अनुपमनिधि वणिकों के हाथ कैसे लगी? अधिकांश वणिकवर्ण ने ही इसे क्यों अपनाया ?

अस्तु, कारण कुछ भी हो, पर वणिकबुद्धि की दाद तो देनी ही पड़ेगी; क्योंकि असि, मसि, कृषि, सेवा, शिल्प और वाणिज्य कर्मों में तो वणिकवर्ग ने वाणिज्य को चुनकर अपनी विशेष बुद्धि का परिचय दिया ही है, भगवान महावीर की देशना को धारण कर **अन्तर के लक्ष सों अयाचीक लक्षपति** बनने का काम भी इन्होंने ही किया है।

अहिंसा, सत्य, अचौर्य और अपरिग्रह के साथ-साथ जिसमें आत्मशान्ति के और जनकल्याणक के अद्भुत सिद्धान्त हैं - ऐसी महावीर की दिव्यदेशना को अपनाकर वणिक वर्ग ने अपना मानव जन्म सार्थक करने का अमोघ उपाय अपनाया है।

बस, इसी से आप अनुमान लगा सकते हैं कि जिस वस्तु को या जिस कर्म एवं धर्म को इस वैश्यवर्ग ने अपनाया होगा, वह लाभदायक तो होगा ही, सुखद भी होगा; क्योंकि वणिक घाटे का सौदा कभी नहीं करते। वैश्यों की इसी वणिकबुद्धि ने वर्ण व जाति की परवाह न करके भगवान महावीर और गौतम गणधर द्वारा निरूपित जैनदर्शन को अपना लिया होगा। उन्होंने न केवल इसे अपनाया; बल्कि इसके तल तक पहुँचने के लिए इसे निरन्तर अध्ययन, मनन एवं चिन्तन का विषय भी बनाया।

इन वर्णों की स्थापना के समय इनमें कोई छोटे-बड़े जैसा भेदभाव नहीं था। सभी वर्ण समान देखे जाते थे; परन्तु धीरे-धीरे व्यक्तियों की बौद्धिक प्रतिभा और काम करने की क्षमता एवं योग्यता के अनुसार इन वर्णों में सहज ही छोटे-बड़े का व्यवहार बन गया, जो स्वाभाविक ही था; प्रथम श्रेणी और चतुर्थ श्रेणी में जो अन्तर है, वह तो रहेगा ही, उस अन्तर को कौन मिटा सकता है?

जैनदर्शन में श्रद्धा रखनेवाले जैन पुराणों के अध्येता तो यह सब जानते ही हैं, मानते ही हैं कि जैनधर्म अनादि-निधन है। इस अनादि-निधन सृष्टि में तीर्थंकरों की अनेक चौबीसियाँ हो चुकी हैं और आगे भी होंगी। उन्हीं में भगवान महावीर

वर्तमान चौबीसी के अन्तिम तीर्थंकर हैं। चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को उन्हीं भगवान महावीरस्वामी का जन्मकल्याणक दिवस, जिसे आज महावीर जयन्ती नाम से जाना जाता है, समस्त देश एवं विदेशों में भी बड़े धूम–धाम से मनाया जाता है।

वस्तुत: जयन्ती और जन्मकल्याणक में बहुत बड़ा अन्तर है। जयन्तियाँ तो पुनर्जन्म लेनेवाले बड़े लोगों की भी मनाई जाती हैं, जबकि जन्मकल्याणक उन्हीं का मनाया जाता है, जिन्होंने जन्म–मरण का नाश कर सिद्धपद प्राप्त कर लिया है।

यद्यपि आज भगवान महावीर यहाँ नहीं हैं; परन्तु उनकी वह दिव्यदेशना आज यहाँ द्वादशांग के सार के रूप में मौजूद है। इसका भरपूर लाभ हमें मिल सकता है, मिल रहा है। उसको पढ़ने/समझने की पात्रता तो हममें हैं। बस, थोड़ी रुचि की जरूरत है।

'जैनधर्म' किसी पंथ विशेष का नाम नहीं है। किसी व्यक्ति विशेष के कुछ सिद्धान्तों या मान्यताओं का नाम भी 'जैनधर्म' नहीं है। किसी तीर्थंकर विशेष ने इसे चलाया नहीं है, वस्तुत: 'जैनधर्म' उस वस्तुस्वरूप का नाम है, जो अनादिकाल से है और अनन्तकाल तक रहेगा। जिसप्रकार अग्नि का स्वभाव उष्णता है, पानी का स्वभाव शीतलता है, उसीप्रकार आत्मा का स्वभावमात्र ज्ञान है, क्षमा है, सरलता है, ये आत्मा के धर्म हैं। अज्ञान, काम, क्रोध, मद, मोह, क्षोभ, हिंसा, असत्य आदि आत्मा के स्वभाव नहीं, विभाव हैं, विकारी भाव हैं। अत: ये अधर्म हैं।

आत्मा के स्वभाव और विभाव को जाने–पहिचाने बिना उक्त स्वभाव की प्राप्ति और विभावों का अभाव होना संभव नहीं है।

आत्मा के इस स्वभाव को जानना–पहिचाना ही सम्यग्दर्शन है, सम्यग्ज्ञान है और इसी स्वभाव में स्थिरता, जमना, रमना सम्यक्चारित्र है और यही मुक्ति का मार्ग है।

इस आत्मज्ञान के साथ स्व–संचालित विश्वव्यवस्था समझना भी अति आवश्यक है। इसके समझने से हमारा अन्तर्द्वन्द्व और बाहर का संघर्ष समाप्त हो सकता है। हम निश्चिन्त और निर्भार होकर अन्तर आत्मा का ध्यान कर सकते हैं, जो हमें पुण्य–पापरूप कर्मबन्धन से मुक्त करा कर वीतरागधर्म की प्राप्ति करा सकता है। एतदर्थ भगवान महावीर की देशना का रहस्य जिनागम के अध्ययन से हम सब जाने। इसी में हम सबका भला है।

पुराणों में तीर्थंकरों एवं महापुरुषों के पूर्वभवों का ही वर्णन क्यों किया गया है, उनकी पीढ़ियों का क्यों नहीं, वंशावलि का क्यों नहीं?

जिन्होंने भी पुराण पढ़े या सुने हैं, उन्होंने पाया होगा कि उनमें महापुरुषों के पूर्वभवों का वर्णन ही विस्तार से है, पीढ़ियों का नहीं। माता–पिता के सिवाय अधिकांश किसी भी पीढ़ी का कहीं कोई उल्लेख नहीं मिलता।

ऐसा क्यों हुआ? यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण विचारणीय विषय है। इसमें लौकिक व पारलौकिक – दोनों दृष्टियों से अनेक तथ्य निहित हैं। भगवान महावीर के पूर्वभवों की प्रासंगिक उपयोगिता की गहराइयों में उतर कर देखें वहाँ भी लौकिक एवं पारलौकिक – दोनों दृष्टियों से अनेक तथ्य निहित हैं।

पारलौकिकदृष्टि से विचार करें तो सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात तो यह है कि पूर्वभवों के ज्ञान से आत्मा की अनादि–अनन्तता सिद्ध होती है और आत्मा की अनादि–अनन्तता की श्रद्धा से हमारा सबसे बड़ा भय–मरणभय समाप्त होता है।

दूसरे, असंख्य भवों में हुए सुख–दुःख रूप उतार–चढ़ाव के अध्ययन से **पुण्य–पाप का स्वरूप ख्याल में आता** है और उसके फल में नाना प्रकार के अनुकूलताओं–प्रतिकूलताओं के परिचय से पुण्य–पाप तथा आस्रव–बंध तत्वों की यथार्थ प्रतीति आती है।

तीसरे, पुण्य–पाप आदि से भिन्न भगवान आत्मा के **पहचानने का सु–अवसर प्राप्त होता** है। पूर्वभवों से ही अपने आत्मा का सीधा सम्बन्ध है, पीढ़ियों से नहीं। अतः पीढ़ियों के परिचय की आवश्यकता नहीं है।

लौकिक दृष्टि से चौथी महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारे हृदयों में जो नीच–ऊँच, अमीर–गरीब का भेद, धर्म और संस्कृति का भेद अथवा प्रान्त और भाषा आदि के भेद के कारण जातिवाद, वर्गवाद, प्रान्तीयता और भाषायी भेद उभरते हैं और इनसे संघर्ष की स्थिति बननी है। वे सब इन

(शेष पृष्ठ 7 पर...)

(पृष्ठ 1 का शेष...)

पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा द्वारा द्रव्यसंग्रह एवं मिथ्याचारित्र का स्वरूप, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा द्वारा 14 गुणस्थान व कर्मसिद्धांत, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री द्वारा समाधि और सल्लेखना, पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री जयपुर द्वारा निमित्त–उपादान, पण्डित चर्चितजी शास्त्री द्वारा देव–शास्त्र–गुरु का स्वरूप विषय पर कक्षाओं का लाभ मिला।

पूजन विधान – प्रात:काल नित्य–नियम पूजन के साथ–साथ श्री नियमसार विधान एवं सायंकाल जिनेन्द्र–भक्ति का आयोजन किया गया। विधि–विधान के समस्त कार्य डॉ. शांतिकुमारजी पाटील के निर्देशन में पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री व पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री द्वारा आयुष शास्त्री, सहज शास्त्री एवं संयम देशमाने के सहयोग से संपन्न हुये। विधान के आमंत्रणकर्ता श्रीमती शकुन्तला धर्मपत्नी डॉ. के.एल. जैन एवं पुत्र–पुत्रवधु विक्रान्त–रेशू जैन, जयपुर थे।

प्रात: 5.30 बजे पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित सिद्धार्थजी दोशी रतलाम एवं पण्डित निखिलजी शास्त्री मुम्बई की प्रौढ कक्षा के पश्चात् जिनवाणी चैनल पर डॉ.भारिल्ल के प्रवचनों का प्रसारण प्रवचन हॉल में ही बड़े पर्दे पर किया जाता था।

शिविर में 22 विद्वानों के माध्यम से लगभग 500 साधर्मियों ने प्रतिदिन 16 घंटे तक चलने वाले तत्त्वज्ञान के कार्यक्रमों का लाभ लिया। इस अवसर पर हजारों घंटों के सी.डी./डी.वी.डी. प्रवचन तथा हजारों रुपयों का सत्साहित्य घर–घर पहुंचा।

(उद्घाटन समारोह के समाचार पिछले अंक में प्रकाशित हो चुके हैं।) ●

उद्घाटन समारोह में उपस्थित जनसमुदाय

अवश्य पधारिये **महामुनिराज आचार्य कुन्दकुन्द देव की तपोभूमि पोन्नूर मलै में आयोजित** तपोभूमि पोन्नूर

जिनदेशना आध्यात्मिक शिविर

शुक्रवार, 21 फरवरी से मंगलवार 25 फरवरी 2020 तक

विद्वत सान्निध्य - पं. शैलेष भाई शाह अहमदाबाद ◆ पं. नीलेशभाई शाह मुम्बई

विशेष आकर्षण :– ◆ आचार्य कुन्दकुन्द की तपो एवं विदेह गमन भूमि पोन्नूर एवं आसपास के अनेक प्राचीन जिनमंदिरों के दर्शन ◆सीमन्धर भगवान के मनोहारी दर्शन एवं पूजन विधान का मधर आयोजन प्राकृतिक एवं शांत वातावरण में जिनवाणी की अमृत देशना ◆ पूज्य गुरुदेवश्री के सीडी प्रवचन एवं उसके रहस्यों का लाभ ◆ अन्य समागत विद्वानों का प्रासंगिक लाभ

संयोजक – विराग शास्त्री, जबलपुर मो. 7000104951 email: kahansandesh@gmail.com

कार्यक्रम स्थल : आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति सेन्टर, कुन्दकुन्द नगर, पोन्नूर मलै तह. वन्देवासी, वडक्कमवाडी जि. तिरुवण्णामलै 604505

निवेदक : श्री कुन्दकुन्द–कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विले पारले मुम्बई

विशेष : इस शिविर में सहभागिता करने के इच्छुक साधर्मी संयोजक से सम्पर्क करें। स्थान सीमित होने से सीमित साधर्मियों को पहले आओ–पहले पाओ के आधार पर प्रवेश दिया जायेगा। कार्यक्रम 21 फरवरी को दोपहर से प्रारम्भ होगा।

पोन्नूर चेन्नई से 130 किमी, बैंगलोर से 360 किमी, पाण्डिचेरी से 88 किमी, वन्दवासी से 8 किमी, चेटपुट से 20 किमी की दूरी पर स्थित है।

आखिर हम करें क्या?

8

-डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

यदि अनादि से सुनिश्चित नहीं होता तो आदिनाथ यह कैसे बता सकते थे कि यह मारीचि एक कोड़ाकोढ़ी सागर बाद चौबीसवाँ तीर्थंकर महावीर होगा तथा एक भव पहले सोलहवें स्वर्ग में रहते हुये उन्होंने मनुष्य आयुकर्म का बंध किया ही था।

पर इनमें परस्पर विरोध नहीं है; क्योंकि हमारी आगामी आयुकर्म का बंध उसी के अनुसार होता है, जिस पर्याय में हमारा जाना अनादि से ही नक्की है।

यहाँ भी यह प्रश्न हो सकता है कि हमारी आगामी आयु का बंध हमारे परिणामों के अनुसार होता है या अनादि सुनिश्चित के अनुसार। हमारे परिणाम भी उस अनादि सुनिश्चित -अनुसार होते हैं। अतः इनमें परस्पर कोई विरोध नहीं है।

इसीप्रकार हमारी ज्ञान पर्याय का ज्ञेय अनादि से तो सुनिश्चित है ही; साथ में सुनिश्चित समय पहले हमारे ज्ञानावरणी कर्म क्षयोपशम भी होता है। इसप्रकार दोनों के अनुसार ही ज्ञानपर्याय का ज्ञेय बनता है। इन दोनों में परस्पर कोई विरोध नहीं है; अपितु सुन्दरतम सुमेल है।

इसप्रकार यह सब सुनिश्चित ही है कि हमारी ज्ञानपर्याय का ज्ञेय अमुक समय में कौन बनेगा? जिसको ज्ञेय बनना है, क्षयोपशम भी उसी के अनुसार ही होगा।

सम्यग्दृष्टि ज्ञानी जीव निर्भय होते हैं; उनकी निर्भयता का आधार वस्तुस्वरूप जान लेना ही होता है।

कविवर बुधजनजी लिखते हैं -

''हमें कछु भय ना रे, जान लियो संसार''

अब हमें किसी भी प्रकार का भय नहीं है; क्योंकि हमने संसार का स्वरूप जान लिया है। उनकी निर्भयता का आधार सुरक्षा की व्यवस्था नहीं है; अपितु संसार का स्वरूप जान लेना है।

वे आगे लिखते हैं -

जा करि जैसे जाहि समय में जो होतव जा द्वार।
सो बनिहै टरिहै कछु नाहीं कर लीनो निर्धार।।

जिसके द्वारा जिसप्रकार जिस समय जिस निमित्त पूर्वक जो होनहार होना है; वह अवश्य होगी, किसी भी स्थिति में टलेगी नहीं - मैंने ऐसा पक्का निर्णय कर लिया है।

वे उक्त कथन को ही संसार का स्वरूप कहते हैं। उनकी दृष्टि में स्त्री-पुत्रादि कोई सगा साथी नहीं है। संकट आने पर कोई साथ नहीं देता है। संसार का स्वरूप यह नहीं है, पर वे साथ दे नहीं सकते; क्योंकि एक द्रव्य का दूसरा द्रव्य कुछ नहीं कर सकता और जिस समय जो होना है, वह हो के ही रहता है, उसे कोई टाल नहीं सकता - संसार का वास्तविक स्वरूप तो यह है। उनकी निर्भयता का आधार तो क्रमनियमित -पर्याय की सच्ची श्रद्धा है।

हम क्रमनियमितपर्याय की श्रद्धा तो करना नहीं चाहते और लौकिक व्यवस्था के आधार पर निर्भय होना चाहते हैं; जो किसी भी स्थिति में संभव नहीं है।

ध्यान की अवस्था में आत्मा को पूरी तरह निश्चिन्त होना चाहिये। **'सब कुछ सुनिश्चित हैं'** वस्तु का यह स्वरूप इसे निश्चिन्त कर सकता है। इसकी सम्यक् श्रद्धा बिना कर्तृत्व के विकल्प टूटते नहीं हैं।

जब हम यह समझाते हैं तो यह एकदम झुंझलाकर कहता है कि 'आखिर हम करें क्या?।

जब हम यह स्पष्ट कहते हैं कि कुछ भी न करो, फिर भी यही कहता है कि आखिर हम करें क्या? **'नहीं करना'** इसकी समझ में ही नहीं आता। अतः नहीं करने की बात को करने की भाषा में पूँछता है।

नहीं करने के लिये भी इसे कुछ करना है, कुछ न कुछ करना है। अनादिकालीन कर्तृत्व का संस्कार इतना गहरा है कि उसके विरुद्ध इसे कुछ समझ ही नहीं आता, सुनाई नहीं देता, दिखाई नहीं देता।

नहीं करने रूप ध्यान के लिये भी इसे कुछ न कुछ करना है। यह इसकी कर्मचेतना है, अज्ञान-चेतना है।

करने के प्रति चेतना ही कर्म चेतना है। करने के प्रति यह इतनी गहराई से चेता हुआ है कि इसे नहीं करने रूप समाधि समझ में ही नहीं आती।

चेतना दो प्रकार की होती है –

१. ज्ञान चेतना और २. अज्ञान चेतना।

अज्ञान चेतना भी दो प्रकार की होती है –

१. कर्म चेतना और २. कर्मफल चेतना।

इसप्रकार कुल मिलाकर यह चेतना तीन प्रकार की हो गई।

१. ज्ञान चेतना २. कर्म चेतना और ३. कर्मफल चेतना।

इसकी स्थिति को निम्नांकित चार्ट से समझा जा सकता है –

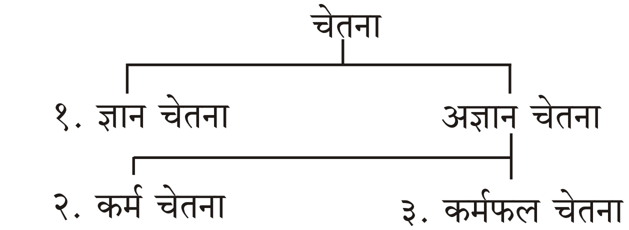

चेतना जाग्रत होने का नाम है। अपने आत्मा के ज्ञान–दर्शन–चारित्र में चेतना ज्ञान चेतना है और कर्म और कर्मफल में चेतना अज्ञान चेतना है। करूँ–करूँ का विकल्प करते रहना, उसी में उलझे रहना कर्म चेतना है और कर्म के फल को भोगने में चेतते रहना कर्मफल चेतना है।

ज्ञानीजनों के ज्ञानचेतना होती है और अज्ञानी जीवों के कर्मचेतना और कर्मफल चेतना होती है।

कर्मचेतना वाले जीव निरन्तर कुछ न कुछ करते रहने के विकल्पों में उलझे रहते हैं। उनकी वृत्ति और प्रवृत्ति **करूँ–करूँ** की होती है। कर्मफल चेतना वाले जीव जो कुछ भी उपलब्ध होता है, उसे भोगने के विकल्प में ही उलझे रहते हैं। कुछ जीव ऐसे भी होते हैं कि जिनकी वृत्ति और प्रवृत्ति करने और भोगने दोनों में होती है।

आत्मा के सहज ज्ञाता–दृष्टा स्वभाव को सहजभाव से स्वीकार करने वाले ज्ञानीजन ज्ञानचेतना वाले हैं।

ज्ञानीजन पर का कर्त्ता तो अपने को मानते ही नहीं हैं, अपनी पर्यायों के फेरफार कर्त्ता भी वे अपने को नहीं मानते। यह श्रद्धा के स्तर की बात है। चारित्रमोह के उदयानुसार उन्हें करने–भोगने के विकल्प आ सकते हैं; तथापि वे श्रद्धा के स्तर पर उनके कर्त्ता–भोक्ता नहीं बनते।

इसप्रकार जानना, मात्र जानना, सहजभाव से जानते रहना ही ज्ञान चेतना है।

पर क्या करें, 'मात्र जानना' इसकी समझ में ही नहीं आता। शुद्ध (प्योर) ज्ञान भी हो सकता है, यह इसकी समझ के बाहर है। अतः जानना, जानना, सिर्फ जानने में इसे शून्य नजर आता है; जबकि आत्मा का स्वभाव सिर्फ जानना ही है, सिद्धभगवान सिर्फ जानते ही हैं, अनन्तकाल तक वे सिर्फ जानते ही रहते हैं और अनन्त सुखी रहते हैं।

सिर्फ जानते रहने में भी अनन्त सुख हो सकता है – यह इसकी समझ के बाहर की चीज हैं।

मात्र जानने के फल में अनन्तानन्द की प्राप्ति होती है। यह पीछे १८वें छन्द में कहके आये हैं; जो इसप्रकार है –

शीघ्र आवेगा भव का अन्त प्रगट होगा आनन्द अनन्त।
ज्ञान–दर्शन भी होंगे नंत वीर्य भी होगा अरे अनन्त।।
अनन्तानन्द अनन्तानन्द अनन्तानन्द अनन्तानन्द।
अनन्तानन्द अनन्तानन्द अरे भोगोगे काल अनन्त।।१८।।[१]

अप्रभावित होकर जानते रहना और जानकर भी अप्रभावित रहना – यह सहजज्ञान की मुख्य विशेषता है। हमारे सभी अरहंत–सिद्धभगवान निरन्तर सबको देखते–जानते रहते हैं; पर उनसे रंचमात्र भी प्रभावित नहीं होते।

यह तो आप जानते ही हैं कि इस संसार में अनन्त जीव हैं और निरन्तर दुख भोग रहे हैं। उनमें उन अरहंत–सिद्ध भगवान के पूर्वभवों के माता–पिता भी हो सकते हैं, भाई–बहिन, पत्नी–पुत्रादि भी हो सकते हैं। उन्हें भी वे देखते–जानते रहते हैं। ऐसी स्थिति में भी वे शान्त रहते हैं, अनन्त सुखी रहते हैं।

ध्यान की अवस्था भी ऐसी ही अवस्था है। यदि हमें अरहंत–सिद्धभगवान बनना है तो हमें भी इसीप्रकार के

१. द्रव्यसंग्रह महामण्डल विधान जयमाला, पृष्ठ–४३

ध्यान को करना होगा; एकदम सहज, शान्त, शीतल रहना होगा। हमें भी अतीन्द्रिय आनन्द की प्राप्ति होगी।

आखिर हमें यही करना है। यही धर्म है। इससे अधिक और कुछ नहीं।

एक बार हृदय की गहराई से यह स्वीकृत हो जावे कि सबकुछ सुनिश्चित है, कुछ भी फेर-फार संभव नहीं है। फेर-फार की आवश्यकता भी नहीं है; क्योंकि उससे कुछ भी होने वाला नहीं है। तो हमारे चित्त में एकदम हल्कापन आये बिना नहीं रहेगा।

जीवन में सहजता आ जावे - इसका एकमात्र उपाय यही है। और कोई रास्ता नहीं है।

आज मानो, कल मानना; चाहे अनन्तकाल बाद मानना; मानना तो यही पड़ेगा; सुख-शान्ति भी इसी से प्राप्त होगी। यदि सुख-शान्ति चाहिये तो शीघ्रातिशीघ्र इस बात को स्वीकार करो, क्रमनियमित पर्यायों को स्वीकारो और जीवन में सहज सहजता लाओ।

आखिर हम तो यह विचार करके संतोष धारण करते हैं कि हमारे विकल्पों से क्या होता है, तुम्हें क्रमनियमित पर्याय की स्वीकृति तो तभी होगी, जब तुम्हारी उक्त पर्याय प्राप्त करने की होनहार होगी, काललब्धि आयेगी और उक्त दिशा में तुम्हारा पुरुषार्थ जागेगा।

वह दिन तुम्हें शीघ्र प्राप्त हो - इस मंगल भावना के साथ विराम लेता हूँ।

(दोहा)

आखिर अब हम क्या करें इतना हमें बताव।
हम अपने में जात हैं तुम अपने में जाव ।। १।।

साम्यभाव धारण करो छोड़ो सभी विकल्प।
भजो अकर्त्ताभाव को हो जावो अविकल्प ।। २।।

- ● -

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

पाठकों के पत्र...

अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की कृतियों 'तत्त्वचिन्तन' व 'क्रमनियमितपर्याय' को पढकर जबलपुर (म.प्र.) से पण्डित विरागजी शास्त्री लिखते हैं कि -

श्रद्धेय छोटे दादा,

सादर जय-जिनेन्द्र एवं चरण स्पर्श।

अभी जयपुर में 22वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर में चल रहे आपके प्रवचनों का नियमित लाभ ले रहा हूँ। आपके प्रवचन सदा की तरह आनन्ददायी और मर्म उद्घाटक हैं। आपके प्रवचनों में जिनागम के रहस्यों के साथ सम सामयिक विषयों पर आपका मार्गदर्शन और आगम सम्मत चिन्तन मुझे बहुत प्रेरणा देता है; जीवन में सहज रूप से चलती हुई समस्याओं व व्यवस्थाओं में त्वरित समाधान प्राप्त होता है। जीवन के इस पड़ाव पर भी आपकी ऊर्जा, उत्साह और जिनागम के प्रति आपका असीम समर्पण हमें भी जिनशासन के प्रति समर्पण की प्रेरणा देता है एवं कभी थकान महसूस नहीं होने देता। आपकी निष्णात लेखनी व प्रखर प्रज्ञा ने जिनागम के लगभग सभी विषयों को स्पर्श किया है और जब ऐसा लगने लगा कि अब आपकी लेखनी विश्राम करेगी तो फिर आपकी अगाध, अनुभवशाली, जिनसूत्र अवगाहिनी बुद्धि ने तत्त्वचिन्तन व क्रमनियमितपर्याय जैसी रचनाओं का सृजन कर दिया। मैं जब भी इन पुस्तकों को पढता हूँ तो विशेष आनन्द की अनुभूति होती है।

आपके उपकार के प्रति भाव अभिव्यक्त करने की भावना बहुत है; पर शब्द मर्यादित हैं। आप मेरे जीवन शिल्पी हैं। आप स्वस्थ रहते हुए चिरकाल तक हम शिष्यों को जिनागमीय आध्यात्मिक रहस्यों से अवगत कराते रहें - ऐसी मंगल भावना है।

(पृष्ठ 3 का शेष...)

पूर्वभवों के वर्णन से सहज ही समाप्त हो जाते हैं; क्योंकि हम पुराणों में पढ़ते हैं कि हिन्दी भाषी भाई मरकर दक्षिण में पैदा हो गया। हरिजन मरकर ब्राह्मण के कुल में उत्पन्न हो गया, सेठ या राजा मरकर निर्धन के यहाँ पैदा हो गया। इस प्रकार पूर्वभवों के ज्ञान से अब तक जो रंग भेद, जाति भेद, प्रान्त भेद व भाषा भेद या धर्म भेद के कारण भिन्नता की भिनभिनाहट होती थी, वह सब समाप्त हो जाती है। जो आज हिन्दू है वही कल मुसलमान हो सकता है। और तो ठीक मर कर कीड़ा-मकौड़ा भी हो सकता है, इससे कीड़ों-मकौड़ों से भी आत्मीयता हो जाती है। इसप्रकार इन सबकी सही जानकारी और श्रद्धा से देश की भी बहुत बड़ी समस्या सहज ही सुलझ सकती है। यही है पूर्वभवों के वर्णन की लौकिक व पारलौकिक उपयोगिता। **(क्रमशः)**

शिविर का समापन एवं पुरस्कार वितरण

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में 22वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह **डॉ. हुकमंचदजी भारिल्ल** की अध्यक्षता में दिनांक 20 अक्टूबर की रात्रि में संपन्न हुआ।

कार्यक्रम में समस्त विद्वत्गण व अध्यापकगणों के अतिरिक्त श्री त्रिलोकचंदजी भरतपुर, पण्डित मनोजजी मुजफ्फरनगर, श्री जनीशजी सनावद, श्री सत्येन्द्रजी जयपुर, श्री प्रेमचंदजी दौसा, श्री ताराचंदजी सौगानी जयपुर, श्री किरणभाई गाला मुम्बई, श्री अनेकान्तजी भारिल्ल, श्रीमती कमला भारिल्ल, श्रीमती गुणमाला भारिल्ल, श्रीमती संस्कृति गोधा, श्रीमती शशि जयपुर, श्रीमती विमला जयपुर आदि महानुभाव उपस्थित थे। सभा में डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. दीपकजी वैद्य, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने अपने विचार व्यक्त किये। तत्पश्चात् सफल विद्यार्थियों को नकद राशि एवं प्रमाण-पत्र देकर पुरस्कृत किया गया।

इस अवसर पर संयम जैन गुढाचन्द्रजी, संयम जैन मड़देवरा, निखिल जैन फिरोजाबाद ने महाविद्यालय एवं शिविर संबंधी काव्यपाठ कर अपने मनोभाव व्यक्त किये। इसके अतिरिक्त प्रजल जैन खनियांधाना व आयुष जैन गौरझामर ने डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा का चित्र (स्कैच) बनाकर भेंट किया। कार्यक्रम में दुर्लभ जैन गुढाचन्द्रजी, संयम जैन दिल्ली, पवित्र जैन आगरा, शाश्वत जैन भोपाल, उमंग जैन अमरमऊ, आकाश जैन बेलगांव आदि छात्रों ने शिविर संबंधी अपने अनुभव सुनाये।

अन्त में डॉ. भारिल्ल ने दीक्षान्त भाषण में कहा कि देश के विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ अध्यापकों का लाभ सभी महाविद्यालय के छात्रों को मिलना चाहिये; इस उद्देश्य से यह शिविर लगाया जाता है। सभी महाविद्यालयों के छात्र एक हैं, सभी को मिलकर तत्त्वज्ञान सीखना व प्रचार-प्रसार करना है। पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने शिविर की रिपोर्ट एवं परीक्षा परिणाम प्रस्तुत किया। अन्तिम दिन चारों महाविद्यालयों के (जयपुर=194, बांसवाड़ा=45, कोटा=47, उदयपुर=26) कुल 312 छात्रों ने एवं 12 अन्य - इसप्रकार कुल 324 साधर्मियों ने परीक्षा दी। महाविद्यालयों में विशेष स्थान प्राप्त करने वाले छात्र इसप्रकार हैं -

उपाध्याय वर्ग में जयपुर से अरविन्द जैन खड़ैरी ने प्रथम व आदित्य जैन फुटैरा ने द्वितीय स्थान, **कोटा** से हिमेश जैन शाहगढ ने प्रथम व राहुल जैन दिल्ली ने द्वितीय स्थान, **बांसवाड़ा** से अतिशय जैन मुजफ्फरनगर ने प्रथम व अमित जैन नौगांव ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

शास्त्री प्रथम वर्ष में जयपुर से अनिमेष भारिल्ल राघौगढ ने प्रथम व स्वस्ति सेठी जयपुर ने द्वितीय स्थान, **कोटा** से वंश जैन पिड़ावा ने प्रथम व अंकित जैन कन्नपुर ने द्वितीय स्थान, **बांसवाड़ा** से अनेकान्त काले राजूरा ने प्रथम व आशीष जैन घुवारा ने द्वितीय स्थान, **उदयपुर** से सुरभि जैन मुम्बई ने प्रथम व रश्मि जैन अभाना ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

शास्त्री द्वितीय-तृतीय वर्ष में जयपुर से संयम जैन दिल्ली ने प्रथम व पवित्र जैन आगरा ने द्वितीय स्थान, **कोटा** से अभिषेक लोधी हिरावल ने प्रथम व शुभम जैन घुवारा ने द्वितीय स्थान, **बांसवाड़ा** से सुशांत चौगुले पंढरपुर ने प्रथम व सुप्रीम जैन पिड़ावा ने द्वितीय स्थान, **उदयपुर** से मयूरी जैन शाहगढ ने प्रथम व प्रियंका जैन बजरंगगढ ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण संयम जैन देशमाने बीड, संचालन समर्थ जैन विदिशा एवं आभार प्रदर्शन जिनेन्द्रजी शास्त्री ने किया। •

पीएच.डी. हेतु सुनहरा अवसर

जैनदर्शन में डाक्टरेट (पीएच.डी.) करने के इच्छुक अभ्यर्थियों को अपना पंजीयन जे.जे.टी. विश्वविद्यालय में कराने हेतु को-गाइड डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई से फोन नं. 9321295265 पर संपर्क करें। आवेदक को किसी भी विषय में कम से कम 55% अंकों से पोस्ट ग्रेजुएट होना अनिवार्य है।

अनादि से विभाव का प्रवाह चल रहा है, इसलिये स्वयं की ओर परिणति का पलटाना अति कठिन है। बारम्बार पुरुषार्थ किया करे, उसे छोड़े नहीं, थकान लगे नहीं, तब उसमें कोई बार तीव्र पुरुषार्थ का प्रसंग बनते ही आत्मप्राप्ति होती है।

(आत्मधर्म, अगस्त-2019 पृष्ठ 3 से साभार)

प्रकाशन तिथि : 28 अक्टूबर 2019

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com